सूरत-मजुरागेट। 78वीं शिवजयन्ती के अवसर पर 12 ज्योतिर्लिंगम दर्शन का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए राजेश देसाई,चेयरमैन स्टैन्डिंग कमिटी, अरविंद भाई मारू,कॉर्पोरेटर, ब्र.कु. सोनल तथा अन्य।

समस्तीपुर-बिहार। 78वीं शिवजयन्ती महोत्सव का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. रानी, वन्दना किनी,आयुक्त,दरभंगा प्रमण्डल, डी.एम. नवीन चन्द्र झा, एस.डी.ओ. सुधीर कुमार, रणबीर सिंह,उप-निदेशक,बागवानी विभाग,बिहार सरकार, रामगोपाल सुरेका,पूर्व उपाध्यक्ष,बिहार इंडस्ट्रीज़ एसोसियेशन, बी.एन.झा,उपाध्यक्ष,आर.जे.एम.मुक्तापुर तथा ब्र.कु. कृष्ण।

ब्रह्मपुर-ओडिशा। 78वीं शिवजयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित शान्तियात्रा का शुभारंभ करते हुए रेणुवाला प्रधान,राज्यसभा सदस्या,दिल्ली, ब्र.कु. मंजु, ब्र.कु. माला तथा अन्य।

टोंक-राज.। शिव जयन्ती के पावन पर्व पर शिव संदेश देते हुए कलश यात्रा निकाली गई।

गदरवाड़ा-म.प्र.। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में 'एक शाम शिव पिता के नाम' कार्यक्रम में शिवरात्रि की शुभकामनाएं देते हुए विधायक गोविंद सिंह पटेल। साथ है ब्र.कु.प्रीति तथा अन्य।

दिल्ली-लोधी रोड। शिवरात्रि महोत्सव पर ध्वज लहराने के बाद प्रभु स्मृति में ब्र.कु.गिरिजा, विधायक मदन लाल, सरोज रजवाड़े,अवर सदस्य रेल्वे बोर्ड, पी.के.सिंह,डी.डी.जी दूरदर्शन तथा अन्य।

भाग्य और पुरुषार्थ... ब्र.कु.मोनिका, शांतिवन

इस संसार में कुछ व्यक्ति भाग्यवादी होते हैं और कुछ केवल अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखते हैं। प्रायः देखा जाता है कि भाग्यवादी व्यक्ति ईश्वरीय इच्छा को सर्वोपरि मानते हैं और अपने प्रयत्नों को क्षीण मान बैठते हैं। ये विधाता का ही दूसरा नाम भाग्य को मान लेते हैं। भाग्यवादी कभी-कभी अकर्मण्यता की स्थिति में भी आ जाते हैं। उनका कथन होता है कि हम कुछ नहीं कर सकते, सब कुछ ईश्वर के अधीन है। हमें उसी प्रकार परिणाम भुगतना पड़ेगा जैसे भगवान चाहेगा।

भाग्योदय शब्द में भाग्य प्रधान है। एक अन्य शब्द है-सूर्योदय। हम जानते हैं कि उदय सूरज का नहीं होता। सूरज तो अपनी जगह पर रहता है, चलती-घूमती तो धरती ही है। फिर भी सूर्योदय हमें बहुत शुभ और सार्थक मालूम होता है। भाग्य भी इसी प्रकार का है। हमारा मुख सही भाग्य की तरफ हो जाए तो इसे भाग्योदय मानना चाहिए। 'वीरभोग्या वसुंधरा' प्राचीन कहावत के अनुसार 'जो पुरुषार्थी हैं, जो साहसी हैं, जिनमें धैर्य है, जो स्वयं का सदुपयोग करना जानते हैं तथा जो अभिष्ट की प्राप्ति के लिए निरंतर मन, वचन, कर्म से कठिन परिश्रम करते हैं, सफलता केवल उन्हीं की दासी होती है।' भाग्य भी ऐसे ही वीर और साहसी लोगों का साथ देता है। इसके विपरीत भाग्य के भरोसे रहने वाले व्यक्ति हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं और यह आशा करते हैं कि एक न एक दिन उनकी किस्मत का सूरज अवश्य चमकेगा। कर्मठ व्यक्ति सदैव कार्यरत रहता है। परिश्रम करने पर भी जब उसे अपेक्षित सफलता नहीं मिलती, तब भी वह अपना धैर्य नहीं खोता। वह अपने मन में संतोष रखता है और अधिक उत्साह के साथ काम में जुट जाता है।

भाग्यवादी प्रायः यह तर्क दिया करते हैं कि भाग्य पर किसी का वश नहीं चलता। मजदूर सारा दिन पसीना बहाकर भी सूखी रोटी पाता है जबकि साहूकार गद्दी पर बैठकर भी सभी प्रकार के सुख भोग लेता है। ''करम गति टारे नहीं टरै।'' भाग्य ने राजा हरीशचन्द्र तक को शमशान घाट की नौकरी करवा दी और भीम जैसे पराक्रमी को रसोइया बनवा दिया। भाग्य के कारण ही

श्रीरामचन्द्र जी को सिंहासन पर बैठने के बजाय वन-वन की खाक छाननी पड़ी।

पुरुषार्थी व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर कार्य सिद्ध कर लेना चाहता है। पुरुषार्थ वह है जो पुरुष को सप्रयास रखे। पुरुष का अर्थ पशु से भिन्न है। बल-विक्रम पशु में अधिक होता है, लेकिन पुरुषार्थ पशु चेष्टा के अर्थ से अधिक भिन्न और श्रेष्ठ है। वासना से पीड़ित होकर पशु में अद्भुत पराक्रम देखा जाता है किंतु यह पुरुष से ही संभव है कि वह आत्मविसर्जन से पराक्रम कर दिखाए। भाग्योदय शब्द में हम इसी सार को पहचानें। भाग्यवादी बनना दूसरी चीज़ है, उसमें हम भाग्य को अपने ऊपर नहीं मानते हैं। भाग्य को यह मानना बहुत ओछा और अधूरा होता है। इसे मानने से सचमुच ही पुरुषार्थ की हानि होती है। पर भाग्य से अपने आपको अलग मानने का हमें अधिकार ही कहाँ है? भाग्य के प्रति अवज्ञा रखना अपने शेष के प्रति अलग अवज्ञाशील होने के बराबर है। हम देखते हैं कि बहुत से लोग हाथ-पैर पटक रहे हैं, दिन-रात जोड़-तोड़ में लगे रहते हैं। कोशिश में कोई कमी न रहने पर भी उन्हें कई बार अपेक्षित सफलता नहीं मिल पाती। ऐसा आखिर क्यों होता है? कोशिश को पुरुषार्थ में सिद्धी मानें तो यह दृश्य दिखाई देना चाहिए कि हाथ-पैर पटकने वाले लोग व्यर्थ निष्फल रह जाएं? यदि वे यह कह उठें कि भाग्य ही उल्टा है तो इसमें गलती नहीं मानी जाएगी?

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पुरुषार्थ और कर्म का मार्ग ही सर्वोत्तम है। उसी पर चलते हुए हम अपने भाग्य के निर्माता बन सकते हैं। मैथिलिशरण गुप्त जी ने पुरुषार्थ के महत्व को दर्शाते हुए लिखा है-

न पुरुषार्थ बिना वह स्वर्ग है
न पुरुषार्थ बिना अपवर्ग है
न पुरुषार्थ बिना क्रियता कहीं
न पुरुषार्थ बिना प्रियता कहीं।
सफलता वर तुल्य वरो उठो।
पुरुष हो पुरुषार्थ करो, उठो।।

पुरुषार्थ से ही भाग्य बनता है। पुरुषार्थ और भाग्य का मेल साधकर चलने से हमें अपेक्षित सफलता प्राप्त हो सकती है। खाली पुरुषार्थ अहंकार उत्पन्न करता है और निरा भाग्यवादी होना अकर्मण्य बनाता है।

स्वधर्म से करें पराधीनता को परास्त

यदि कुछ करने की इच्छा हमारे मन में दृढ़ हो तो संकल्प शक्ति बहुत काम कर सकती है। कमज़ोर संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं, चाहते हुए भी सफलता कम मिलती है। ऐसे नहीं सफलता नहीं होती है, परन्तु जितनी होनी चाहिए उतनी नहीं होती है। लेकिन बाबा को साथी बना दो तो अनुभव होगा कि सफलता हमारे पीछे घूम रही है। स्व की स्थिति के आधार से सेवा में भी सफलता अवश्य होती है। जो विशाल दिल वाले होते हैं वह कभी कोई हद में नहीं आते हैं। सच्चे दिल से इच्छा है तो फिर सफलता हासिल हो जाती है। स्व के लिए चाहे सेवा के लिए भले कितना ही अच्छा संकल्प और श्रेष्ठ संग हो लेकिन हद है तो सफल करने नहीं देगी। इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं कि एक तो हदों से पार हो जाओ, दूसरा समय अनुसार हर बात को बिन्दी लगाओ।

जैसे समय अनुसार हर धर्म वाली आत्मायें नीचे आती हैं ऐसे अभी समय अनुसार जो आत्मायें बिछड़ गई हैं या दूर चली गई हैं वह समीप आयेंगी। उन्हें मधुबन, बाबा, ज्ञान सब अपना लगेगा। अच्छा, प्यारा लगेगा। हमारी भावना क्या है? सच्चा और पक्का बनना है। नियम जो बाबा ने बनाकर दिए हैं, उसको पालन करते हुए हमको पक्का बनना है।

स्वधर्म में रहें तो सर्वशक्तिमान बाबा की शक्तियों को खींच सकते हैं। बाबा का साथ माना बाबा की सर्व शक्तियाँ हमारे साथ काम करती रहें, जैसे शक्तियाँ ही हमको चला रही हैं। तो इस परिवर्तन से हमें नई लाइफ मिलती है, जीवन जीने की नई कला मिलती है। अभी बाबा जो नॉलेज पेज 8 पर शेष

छपरा-बिहार। शिव जयन्ती के उपलक्ष्य पर मंडलीय आयुक्त एस.एम.राजू को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सीता माता।

भवानी मण्डी-राज.। शिवरात्रि के अवसर पर दीप प्रज्वलन करते हुए ब्र.कु.मीना, विधायक रामचन्द्र सुनारीवाल।

भिवानी-हरियाणा। पूर्व विधायक शशि रंजन परमार को शिव अवतरण का संदेश देने के पश्चात् ओम शान्ति मीडिया एवं सौगात देते हुए ब्र.कु.सुमित्रा।